महिला सशक्तिकरण का प्रभावी साधन महिला उद्यमिता – एक अध्ययन

डॉ. सुजाता साखरे
सहयोगी प्राध्यापक
विभागप्रमुख, गृहशास्त्र विभाग,
दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय,
जरीपटका, नागपुर.

सारांश

एक छोटे से उद्योग को बड़ा करने के लिए हमेशा तत्पर होकर अपने कार्य को बड़े ही लगन के साथ आगे बढ़ानेवाली अनेक महिला उद्यमी अपने देश में है। अपने साथ–साथ अन्य महिलाओं को उद्योग के द्वारा सशक्त बनाने का काम भी बडी ही सहजता से वह कर रही है। जिससे महिलाएँ सबल सशक्त बनी है। परिवार मे महिला शिक्षित रहे तो पुरा परिवार शिक्षित हो जाता है वैसे ही यदि एक महिला उद्यमी रही तो वो आसपास के अनेक महिलाओं को अपने साथ जोडकर सशक्तीकरण का काम करती है। सरकार की योजनाओं का योग्य उपयोग करके अपने उद्योग को बढ़ाने का अथवा नये सिरे से सुरू करने का प्रयास कर रही है। अनेक रीतिरिवाजो को दूर करके एक सफल उद्यमी के तौर पर खडी है। उसके लिए परिवार के सदस्यो के साथ निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास ये सारी बाते भी जरूरी है।

की वर्ड – उद्यमी–उदयोजक, साधन–पर्याय

प्रस्तावना

पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलामजी के शब्दों में ''एक अच्छे राष्ट्र को बचाने के लिए महिला सशक्तिकरण एक आवश्यक पूर्व दशा है, क्योंकि जब एक महिला सशक्त होती है तो समाज में स्थायित्व सुनिश्चित होता है। महिला सशक्तिकरण आवश्यक है क्योंकि उनके विचार एवं मूल्य ही एक अच्छे परिवार, अच्छे समाज एवं अंत में एक अच्छे राष्ट्र के विकास की अगुवाई करता है।''

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता को समाहित करते हुए सामाजिक सेवाओं के लिए समान वेतन, कानून के तहत सुरक्षा देने का अधिकार आदि प्रदान करना है। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं में आत्मविश्वास के बारे मे चेतना जागृत की जाए जिससे न केवल महिलाओं का कल्याण होगा बल्कि वह सामाजिक विकास की प्रवर्तक भी बन सकती है।

महिला सशक्तिकरण का संबंध महिलाओं के तरक्की व पुरूष प्रधान समाज में उन्हे समान स्थान मिले इससे है। कई पढ़ने मे आया की

''महिला अबला नही सबला है,
जीवन कैसे जीना यह उसका फैसला है।''

अपने जीवन से जुड़ी सभी निर्णय स्वयं ले सके। आज अपने कौशल्य, आत्मविश्वास और शिष्टता के आधार पर दुनिया की किसी भी चुनौतीओं को संभालने में सक्षम है। सामाजिक असमानता, हिंसा, अत्याचार इन सबसे छुटकारा पाना है तो आवश्यकता है, महिला सशक्तिकरण की प्रत्येक महिला यदि ये माने की मै हर कार्य को करने में सक्षम हूँ, अपने पर विश्वास रखे तो वह हर समस्या को आसानी से पार कर सकती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य है, ''लोगों को जगाने के लिए

महिलाओं का जागृत होना जरूरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा ले तो परिवार आगे बढ़ता है इसके साथ–साथ गाँव और रा ट्र का विकास होता है। लेकिन कुछ ऐसी बाधाएँ है जो महिला सशक्तिकरण के आडे आती है। मनु य, आर्थिक या पर्यावरण से संबंधित कोई भी छोटी या बड़ी समस्या का बेहतर उपाय महिला सशक्तिकरण है।

उद्देश्य (Objective)

१. महिलाएँ आत्मनिर्भर बने।

२. स्वयं निर्णय ले सके।

३. परिवार में मान सन्मान मिले।

४. सरकारी योजनाओं की जानकारी हर महिलाओं को मिले।

उद्यमी होने के साथ–साथ परिवार में आज भी अपनी दोहरी भूमिका निभा रही है। दोहरी भूमिका के साथ वह समाज में उत्तम उद्यमी के तौर पर कार्य कर रही है।

परिकल्पना (Hypothsis)

१. उद्यमिता से महिलाएँ आत्मनिर्भर बनी है।

२. उद्यमि के व्यापक क्षेत्र में वह स्वयं निर्णय लेती है।

३. गाँव खेडें मे सरकारी योजना की जानकारी महिलाओं को मिलती है।

संशोधन मर्यादा –

प्रस्तुत सर्वेक्षण के लिए उत्तर नागपुर की उद्यमी महिलाओं का नमुना निवड पध्दती से सर्वे किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से समस्या का समाधान लिया गया तथा मुलाखत द्वारा सूक्ष्मता से उनके व्यवसाय का परिक्षण किया गया। संशोधन मर्यादा ५० रखी गयी।

विश्लेषण – तालिका १

घटक	प्रतिशत
आत्मनिर्भर	80%
निर्णय क्षमता	88%
आत्मविश्वास	80%
सन्मान /प्रतिष्ठा	84%
सरकारी योजना	81%
लघू उद्योग	80%
मध्यम उद्योग	54%

प्रस्तुत संशोधन का विस्तार से अध्ययन करते है तो ये पता चलता है की साधारणत: 80% महिलाएँ आत्मनिर्भर बनी है। जिनके पास नेतृत्व गुण, निर्णय क्षमता है वो उद्यमी है और जिन महिलाओं के पास आय की कमी है उन्हे योग्य जानकारी की कमी दिखी, सरकारी योजनाओं की जानकारी नही होने के कारण कुछ महिलाएँ अपना व्यवसाय नहीं कर पा रही है।

महिला उद्यमिओं में निर्णय क्षमता यह ८८% दिखा है। वे अपने क्षेत्र मे स्वयं निर्णय ले पा रही है। ये गुण उनका सराहनीय हैं क्योंकि पुरूषप्रधान संस्कृती मे निर्णय लेने का अधिकार उसने पा लिया है। स्वयं का उद्योग होने के कारण इन महिला उद्यमिओं को समाज मे मान सन्मान, प्रतिष्ठा काफी अच्छा है। महिला उद्यमि ये मानती है यदि कोई भी महिला अपना खुद का छोटा–मोटा स्वयंरोजगार करे तो उसे समाज में सन्मान मिलता है। ऐसे सोचनेवाली ८४% प्रतिशत महिलाएँ है। ग्रामीण क्षेत्र की तुलना मे शहर मे रहनेवाली महिलाओं की सरकारी योजनाओं की जानकारी ज्यादा है। साधारणत: ८१% प्रतिशत महिला उद्यमि को सरकारी योजनाओं की जानकारी है। प्रस्तुत संशोधन में लघू उद्योग करनेवाली महिलाओं का ८०% प्रतिशत प्रतिसाद रहा और मध्यम उद्योग करनेवाली ५४% प्रतिशत महिला उद्यमि है। महिला उद्यमि से आत्मविश्वास यह गुण ८०% दिखाई दिया।

भारत में महिला सशक्तीकरण के मार्ग मे आनेवाली बाधाएँ :

समाजिक मापदंड
कार्यक्षेत्र मे शारीरिक शोषण
लैंगिक भेदभाव
कार्य के मुआवजे मे असमानता
अज्ञान व नारी अशिक्षा
बढ़ते अपराध
गर्भ मे कन्या भ्रूण हत्या

इन बाधाओं को रोकने के लिए महिलाओं का चहुँमुखी विकास जरूरी है। महिला सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलायी जाती है। महिला एवं बालविकास कल्याण मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा निम्न कुछ योजनाएँ है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
महिला हेल्पलाइन
उज्वला योजना
महिला शक्ति केंद्र
सबला – किशोरीओं के सबलिकरण के लिए
इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना
स्वाधार घर योजना

इन योजनाओं के द्वारा सरकार का एक प्रयास है कि इन कार्यक्रमों से महिला सशक्त बने और आनेवाले दिनो में वह पुरूषों के बराबर भागीदार बनके आत्मविश्वास और दृढ़निश्चिय के साथ अपना काम करे।

वर्तमान समय मे परंपरागत नारी की छवी बदली हुई दिख रही है, अभी तक स्त्री का मूल्य निर्धारण पुरूष करता था, अब वह स्वयं अपना मूल्य निर्धारित कर रही है। यह जो परिवर्तन है वह समाज में दिख रहा है किंतु समाज का स्त्री को देखने का नजरीया आज भी अलग ही है।

निष्कर्ष :

वर्तमान मे हर महिला यह सोचती है कि वह अपना छोटा–छोटा गृहउद्योग कर सके। दिक्कत सिर्फ इस बात की आती है। उसके पास जमा पूँजी नही होती या फिर उसे ठिक से बैंक या अन्य योजनाओं की जानकारी नही होती। किंतु आज के वैज्ञानिक युग मे जहाँ सोशल मिडिया घर–घर मे है। इस माध्यम का उसे बहोत ज्यादा उपयोग हुआ है। ज्यादा पढ़ी लिखी नही होने के बावजूद भी वे अपना उदयोग बड़े ही आत्मविश्वास के साथ संभाल रही है। महिला उद्यमि मे निर्णय क्षमता का गुण दिखा है। आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के कारण वह अपना काम कर रही है।

संदर्भ

१. महिला उद्यमिता – डॉ. संजय तिवारी, डॉ. अंशुजा तिवारी
२. उद्यमिता के मूलाधार – डॉ. पी.से. जैन, डॉ. एन. शर्मा
३. उद्यमिय गतिशीलता – विनय कुमार शर्मा
४. सोनी, संजीव गुप्ता
५. महिला सशक्तिकरण – विभिन्न आयाम – उमेश प्रताप सिंह, राजेश गर्ग
६. महिला सशक्तिकरण – जया पाण्डेय